एक परिचय

यह काव्य पुस्तिका मैंने, पौराणिक ग्रन्थ दुर्गा सप्तशती के आधार पर लिखने का प्रयत्न किया है जन मानस को सरल छंद में माँ दुर्गा की महत्ता एवं प्रादुर्भाव का संक्षिप्त विवरण देने की यह कोशिश है | यह ग्रन्थ शोक निवारण, चिंता मुक्त करने के साथ साथ सिद्धि-रिद्धि प्रदान करने वाला एवं सभी मनोकामना पूर्ण करने वाला है|

सप्त-शती के प्रथम अध्याय में मेघा ऋषि कहते हैं,

“ महाराज आप शोक निवारण हेतु उन्ही भगवती परमेश्वरी की शरण ग्रहण कीजिये, वे आराधना से प्रसन्न हो कर मनुष्यों को भोग, स्वर्ग, अनुपरावर्ती मोक्ष प्रदान करती है |”

मार्कंडेय ब्रह्म-पुराण में इस कथा का उल्लेख है |

जो व्यक्ति विधि-विधान से इस ग्रन्थ का नियमित पाठ करता है, वह सर्व सुखों को प्राप्त करता है |

अदि गुरु शंकराचार्य ने दुर्गा-मानस-पूजा में विस्तृत रूप से पूजा विधि का विवरण लिखा है, संक्षिप्त में इतना ही है की नवरात्री के

नौ दिन तो शती का पाठ करना ही चाहिए, ये अद्भुत फल देते है, यदि प्रत्येक दिन पूर्ण पाठ करे एवं इच्छित फल प्राप्ति हेतु अलग अलग मन्त्रों का सम्पुट दें, अन्यथा प्रथम चरित्र अवं अन्य चरित्रों को क्रमशः पढ़ें,मृतसंजीवनी मन्त्र नित्य पढ़ें |

सप्त-शती ७०० श्लोकों से रचित १३ अध्यायों में समाहित अनूठा काव्य है जो न मात्र हिंदू संस्कृति बल्कि विश्व को एक ज्ञान देता है, इस के पाठ में संबोधनात्मक शब्द जैसे "श्री भगवान उवाच" भी एक पूर्ण श्लोक है | हर अध्याय के पठन से निश्चित रूप से समस्याएं नाश होतीं है पंडितों का कथन है की अगर १० बार कोई विशेष अध्याय पढ़ा जाय तो उस अध्याय की ज्योति अवश्य वो कष्ट दूर करती है |

अध्यायों का फलादेश इस प्रकार है,

१. चिंता-मुक्ति२.शत्रु पराजय३.विरोधों का नाश

४.शक्ति-प्राप्ति५.भक्ति प्राप्ति६.डर-शक का दूर होना

७. मनोकामना पूर्ण होना८.सात्विक-वशीकरण

९.संतान प्राप्ति१०.संतान-उन्नति११.व्यवसाय में उन्नति१२.मान-सम्मान में उन्नति१३. मौक्ष प्राप्ति

इसी तरह नवरात्रि के नौ दिनों में पढ़ने का विशेष महत्त्व बताया गया है, पहले दिन-निरोगी काया,दूसरे दिन-लंबी उम्र, तीसरे दिन- दुःख दारिद्रय हरण, चौथे दिन – आत्मविश्वास, पांचवे दिन-बुद्धि विकास, छठे दिन-मनोकामना पूर्ति, सातवें

दिन-अकस्मात हुई बाधा का निवारण, आठवें दिन-परेशानी से मुक्ति, नौवें दिन- मनोरथ पूर्ति |

दुर्गा सप्त-शती के प्रत्येक अक्षर में अमृत का वास होता है |

मेरा यह तुक्ष प्रयास आशा है आप सभी को अच्छा लगेगा, कोई त्रुटि हुई हो तो ज्ञात अवश्य कराईयेगा ताकि भूल सुधार सकूँ |

आपका

सुरेश कुमार चौधरी

गणेश वंदना

चौपय्या छंद

हे देव करिवदन, है अभिनन्दन,   काज सारें हों सफल
करूं शीश नमन, भाव समर्पण, किरपा कीजिये सकल
गौरी सुत गणेश, प्रभु विघ्नेश,   कष्ट हरो   लम्बोदर

करूँ प्रथम पुजन, बसिए हर मन, नाथ आप पितु होकर

विद्या बुद्धि जनक, सर मुकुट कनक, सोहे शोभा अपार
लड्डू मोदक प्रिय, आन बसो हिय, गणेश करो जग पार
हे पालन कर्ता, सब दुःख हर्ता,   सिद्धि दायक गणराज
आप शंकर तनय, करता विनय, अब सिद्ध कर सब काज

माँ की वंदना

त्रिभंगी छंद

जय जय जगदम्बे, जय जय अम्बे, हे माँ अभिनन्दन करता
हूँ तेरे चरण में, ले ले शरण में, नित नित ध्यान मै धरता
आलोक हो अंतस, दूर हो तमस, मात यह कृपया कीजिये
मात गिरिनंदिनी, सिंह वाहिनी, भय ह्रदय के हर लीजिये ||

भंवरों की रानी ,जीण भवानी, काट बंधन, जग तारिणी
माँ झांकी प्रभूत ,दर्शन अद्भुत , माँ काजल शिखर वासिनी
महिसासुर मर्दिनी, नन्द नंदिनी, ज्ञान चक्षु खोल दीजिये
दुर्गातिविनाशनी, कष्ट हारणी, ताप त्रय नाश कीजिये ||

हे कुल देवि जीण, माँ बुद्धि प्रवीण, आशीष शिरोधार्य हो
रूप छटा अनुपम, देवी उत्तम, उत्तम ही सर्व कार्य हों,
देवि दुर्गा जया, काली विजया, अम्बे भवानी चण्डिके
महिसासुर मर्दिनि, शोक विनाशनि, अभिनन्दन माँ अम्बिके ||

आदिशक्ति जगत्जननी की स्तुति
सौजन्य :चिदानंद शुक्ल (संदोह)

दोहा :-
मातु सरस्वति ध्यान धर,, सुमिरों हृदय गणेश |
शप्तशती छंद लय लिखूं ,, गुरुवर बनो महेश ||

शिव बोले तब अम्ब से ,,बतलाओ कुछ ज्ञान |
कलि में संकट सब कटे ,, हो जग का कल्यान ||

भक्ति सुलभ देवी तेरी,, करती करम विधान |
कलि में पूरण काज हो ,, निज मुख करो बखान ||

अम्बा तब कहने लगी ,, है तव मम बड़ स्नेह |
जो जन अम्बा स्तुति करे ,, कंचन बरसे मेह ||

छंद
सप्तश्लोकी स्त्रोत्र मंत्र ,, के ऋषि हरि अनंत
काली लक्ष्मी शारदे है ,, ग्रन्थ इस देवता
जगदम्ब हो प्रसन्न ,, देवहू उच्च आसन्न
भेजता हूँ आज मै ,, मातु गणों को नेवता
जप ध्यान मातु करूँ ,,और विनियोग करूं
मझधार बिच नाँव ,, नही कोई खेवता
दिन मंगलवार है ,,मंगल ही स्तुति बने
संदोह माँ चरणों को,, बार बार सेवता

चौपय छंद
नमामि नारायनि मंगल दायनि मंगल मयी तुम्ही हो
कल्याण की देवी सुर मुनि सेवी शम्भु कि शक्ती शिवी हो

भव भय को हरती सब सिद्ध करती मातु तुम्ही गौरी हो
जो शरण तुम्हारी आये दुखारी दुख सबहीं हरती हो

चौपय छंद
तुम सर्व स्वरूपा रूप अनूपा अम्ब तुम्ही रखवारी
हो दया तुम्हारी मातु हमारी व्याधि हरे तन सारी
जो क्रोधित माता रूठ विधाता फिर को काज सम्हारी
जो जन करे भक्ती मातु दें शक्ती राखों लाज हमारी

दोहा
सब बाधा को शांत करि शत्रुन करो विनाश
संदोह चरण तेरे पड़ा ,, नहीं किसी की आस

शम्भु कहें गिरिजा सुनो ,,हिय में चित्त लगाय
अष्टोत्तरशत नाम की ,, महिमा रहे बताय

चौपाई
आद्या , साध्वी, आदि भवानी ,, भव प्रीता , भव मोचनि जानी |
सती ,त्रिलोचनि ,शूल धारीणी,, दुर्गा ,जया,पिनाक धारीणी ||
महातपा ,चंड घंटा माता,, मनन शक्ति, सदागति की दाता |
बोध शक्ति , माँ सत्त स्वरूपा ,, सत्यानन्दनी मातु अनूपा ||
भाविनी, भाव्या,भव्या देवी ,, विविधि रंग ,पाटलवती सेवी |
चिता,चितिः ,चिंता , चित्तरूपा ,, सर्वमंत्र मयि,अगणित रूपा ||
दक्ष सुता दक्ष यज्ञ विनाशिनी ,, अभव्या ,अपर्णा शिव भामिनी |
वागेश्वरी ,पाटला माता ,, रत्नप्रिया ,अम्बे देवमाता

दोहा -:7
सदा रेशमी वस्त्र को ,, धारण करती मातु
मधुर ध्वनि मंजीर की होती रहती साथ

चौपाई

है असीम बल मातु आपका,, दैत्य विनाशे रूप कालका
त्रिपुर सुंदरी मातु कहावें ,,कौमारी वैष्णवी को ध्यावें
ब्राम्ही महेश्वरी चामुंडा ,, वाराही ,विमला कर दंडा
वन दुर्गा मातंगी भवानी ,, मतंग ऋषि पूजति जग जानी
ऐन्द्री और सुंदरी अम्बा ,, लक्ष्मी रूप मातु जगदम्बा
पुरुषाकृति उत्कर्षणि ज्ञाना ,, नित्या क्रिया बुद्धिदा ध्याना
बहुला बहुल प्रेम मन माही ,, सर्ववाहन वाहनी कहाहीं
शुम्भ निशुम्भ विदारणि देवी ,, महिषासुर मर्दैव सुर सेवी
मधु कैटभ तुम दैत्य संहारे ,, चंडहि मुंडहि ह्रदय विदारे

दोहा
सब असुरो को नाश कर ,, दानव दिए विदार
गगन पुष्प बरसाय कर ,, देव करे जयकार

सभी शास्त्र की दायिनी ,, सत्या , यति है अम्ब
कैशोरी , युवती , भजूं ,, मुक्तकेशि जगदम्ब

सर्व शास्त्र धारिणी सर्व शस्त्र धारिणी
नमामि ब्रम्ह चारिणी नमामि ब्रम्ह चारिणी
अनेक अस्त्र हस्तिनी अनेक शस्त्र हस्तिनी
नमामि वाग्वादिनी नमामि वाग्वादिनी
कन्या रूप भामिनी किशोरी रूप दामिनी
नमामि ब्रम्ह वादिनी नमामि ब्रम्ह वादिनी
विष्णु माया नारायनी कालरात्रि तपस्वनी
नमामि शिव दूतनी नमामि शिव दूतनी

दोहा
महोदरी बलदायनी ,, जलोदरी माँ रूप
सावित्री ,प्रत्यक्षा जग ,, माँ के रूप अनूप

कात्यायनि कराली माँ ,, परमेश्वरि जगदम्ब
संकट सब घेरे खड़े ,, कष्ट हरो अविलम्ब

अम्बा जी की वंदना

सौजन्य : श्री मनोज नौटियाल

हे जगदम्बा केहि विधि अम्बा वर्णन तोर बखानू ?
मै मति हीना भक्ति विहीना तोर मरम नहि जानू ||

ओजित भाला नयन दयाला नवनिधि की हो दाता
सिंह वाहिनी -ज्ञान दायिनी ज्ञान ज्योति दे माता ||

महिषासुर मर्दिनी भक्ति विवर्धिनि दान अभय दीजो
नरमुंड विराजे खप्पर साजे माँ मन्त्र सिद्‌ध कीजो ||

शमशान वासिनी काल हारिणी रूप भयंकर साजे
किल किलकारे भर हुंकारे दनाव खल दल भाजे ||

कर मधु पाना , रक्त स्नाना मन का मान चढाऊँ
स्तुति गाऊं तुम्हे मनाऊँ जय जय काली मै ध्याऊँ ||

अब माँ वर दे सब दुःख हर दे अंतर तम को दूर रो
हे शक्ति स्वरूपा मरम अनूपा मातु मेरे सब कष्ट हरो ||

हे शिव संगिनि तंत्र विरंचिनि दास मनोज ये विनय करे
तुमको ध्याऊँ निकट मै पाऊँ सांस सांस माँ को सिमरे

कुलदेवी की वंदना

हे देवि सिद्धिदात्री !
आप मात स्वरूपा
सिद्ध करें मेरे संकल्प,
मानव रूप पाया हूँ,
शुचिता,धर्मिता,सत्यता पालन कर
निज मन स्वस्थ बनाऊं,
ऊँचे हों अचार व्यवहार
दूर हो मन से सारे दुर्विचार
मात शक्ति स्वरुपा
दे शक्ति दे
विपरीत परिस्थितियों में भी न डिगे कदम
आपकी प्रेरणा रहे हर दम
दे आरोग्य माँ
दे सोभाग्य माँ
दे परम सुख माँ
ताकि निर्वहन कर सकूँ अपनी जिम्मेदारियों का
यश दे
निरोगी तन दे
कुरूतियों से जय दे
नष्ट कर सारे क्रोध काम और वितृष्णा
नमन तुझे, नमन तुझे, माँ कृष्णा ||

प्राथना

हे जगन्माता !

आप अनुपम तेजोमयी माँ !
आप के मुख मंडल पर आभाषित तेज मुझे प्रदान करें,
मै भी प्रसन्नचित्त, प्रफुल्लित रहूँ |
कोमल केशों में समाहित सुरुभी से मुझे सुरभित करो,
मै पा कोमलता कोमल बनूँ |
ललाट पर विराजित देदीप्य-मान ओज दे माँ,
ज्ञानोदय मेरे मस्तिस्क में हो |
आपके राजीव-लोचन से प्रवाहित ज्योत मुझे में प्रवेशित करे,
मेरे चक्षु भी विनय-अन्य की भिन्नता जान सके |
आपके वक्षस्थल में शोभित करुणा दें माँ,
मै भी करुण बन दीन-सेवक होऊं |
आपकी दसों भुजाएं अस्त्र-शस्त्र से शोभायमान हो रही,
मुझे भी दसों दिशाओं से आ रही विपत्ति का अग्रिम भान हो |
माँ आपके केहरी के गर्जन से भयभीत हुआ जा रहा,
मुझे शक्ति दे, मै सब कुत्षित विचारों से लड़ सकूँ |
आपके अवर्णनीय चरणों में स्थान दे,
प्रत्येक क्षण आपकी शरण रहूँ |

भाग-१

(प्रारम्भ)

हे सिंह-वाहिनी देवी !

नमन,

खडग-चक्र-गदा धारिणी देवी

नमन,

वाण-शूल-धनुष धारिणी देवी

नमन,

हे त्रिनेत्री देवी,

अभिनन्दन

हे गिरी नंदिनी

विश्व विनोदिनी
विन्ध्य वासिनी
जय जय हे महिषासुरमर्दिनी |
=========
मात् तेरा वंदन ,
चरण-अभिनन्दन,
हे , कुलदेवी
शत-शत नमन ॥

हे माँ, शक्ति-प्रदायनी,
काजल शिखर निवासनी,
जीण-जीवनदायनी,
चपल सौदामनी,
भ्रमर-दल गहन,
करे अरि शमन,
शत-शत नमन |

हे, सिंह सुशोभिनी,
अति सुन्दर मन लोभिनी,
महिषासुर मर्दिनी,
हे, गिर नंदिनी,
शीतल कर कुंठित मन,
देवी, शत-शत नमन |
=============

प्रारंभ

खोजने अंतस शांति, विचर रहे वन-वन
हार प्रबल शत्रुओं से निकाले गए राजन,
दुरात्मा बंधुओं ने छीने समस्त संसाधन,
विहड़ वन, प्रभुत्व-हीन, सुरथ ढूंढे आसन |

आश्रम एक अति सौम्य सरोवर तट पाया,
प्रेमानुभूति, शांति का मनोहर दृश्य छाया,
जंहा सिंह-व्याल रह रहे साथ पशु-धन के,
प्रेम शांति से विचर रहे प्राणी पावन वन के |

आसक्ति वश राजा भुला न पाया जो खोया,
पूर्वज थे धर्मवीर,कर्मवीर, वो वीर सोच रोया,
आकृष्टचित कर रही ममता उसी शासन में,
चिंतित सोच-सोच, वंचित राज्य प्रशासन में |

मोह, आसक्ति ही दुःख का स्रोत होता जान,
न हो चित्त अधीन, शोक का कारण महान
मृत तन से क्यूँ मोह होता, नही इसका भान,
न रहा राज भी उसका, छोड़ मोह ओ अज्ञान |

ऋषि मेघा अति ज्ञानी, अति शील, अति धीर,
विवेक शून्य-मूढ़ राजन, और बुद्धिहीन शरीर |

सब जीव होते ज्ञानी बुद्धिवान विषय के मार्ग में,
विषय-भोग भी भिन्न-भिन्न, होते अनुराग में,
होते मनुष्य विवेक-शील, होते मोह में आसक्त,
अन्य प्राण-धारी भी होते वैसे ही विषयासक्त |

मोह-संलग्नता होती दोनों में एक समान,
दोनों ही होते सृजित परिणाम से अज्ञान,

स्वयं भूखे रहकर भी देते पुत्रों को भोजन,
स्वयं पीड़ित रह करभी, करते तन अर्पण |

मोह जन्म लेता निज-जन से पाने की चाह में,
घिरते मोह में, वे मात्र योग-निंद्रा के प्रभाव से |

दुर्गर्तिविनाशनी
भाग-२
(मधु-कैटभ वध)

भगवान श्री-हरी की योग निंद्रा महामाया,
करती अपने मोह वश,गुणी,ज्ञानी निर्माया |

वही देवी सृष्टा चराचर जगत के प्रादुर्भाव की,
वही देवी नित्य स्वरूपा-वही प्राकट्य भाव की |

हैं देवी आप अजन्मा ,नित्य, है आप अनिमेष,
प्रकट होती तब, हो जब-जब देव कार्य विशेष |

जब निमग्न एकावर्ण में जगत हो रहा था,
कालान्त के परिवेश जब जगत सो रहा था|

जगत-पिता भी सो रहे थे अचिन्त्य निंद्रा में,
असुर दो उत्पन्न हुए प्रभु कर्णों की तन्द्रा में |

मधु-कैटभ दो असुर, धरासुर, बलशाली, वीर,
थे अति शक्ति-शाली, महा शूर, अति गंभीर |

ब्रह्मा जी के वध हेतु, हुए जा रहे थे वे अधीर,
विष्णु-नाभि-कमल विराजित प्रजापिता प्रवीर |

थे चिर निंद्रा में लक्ष्मी-पति शेष-शैया पर लीन,
महा-माया, योग-माया के कु-प्रकोप के अधीन |

जागृत करने हरी को,योगमाया का किया स्तवन
ब्रह्मा मना रहे, प्रभु जागें, असुरों का करने हनन |

हे जग-धारिणी,
अधीश्वरी,पालन-हारिणी,
विष्णु-शक्ति तू,
संहारक तू,
स्वाहा तू,स्वधा तू,
वषतकार तू,
जीवन-दायनी अमृत-धार तू |
ॐ के समस्त अक्षरों का सार तू,
संध्या तू,
सावित्री तू,
जीवन आधार तू |

हे जगजननी,
विश्व-धारिणी,
जग संहारनी,

हे जगन्मयी देवी,
महा-माया,मेघा,स्मृति,
मोह रूपा, महा देवी-स्तुति |
काल रात्रि-मोह रात्रि,
तू महा रात्रि |
सौम्य-सुन्दर,
सुन्दरत्तम उपहार तू |
जाग देवी,जाग,
अतिशीघ्र जाग,
मोह-पाश डाल असुर प्रवृति पर,
आलोकित कर तेज विष्णु शक्ति पर |

सुन प्रसन्न हुई योगमाया,योग निंद्रा,
कर्ण-मुख-नासिका-बाहू,
हृदय-वक्ष:स्थल,
से आवृति हुई देवी
समक्ष योग-निंद्रा का कर अवलोकन,
जाग गए-जाग गए भगवन |
किया अभूत पूर्व गर्जन,
जो असुर थे ब्रह्मा को निगलने को उद्दित,
किया बाहू-युद्ध घनघोर,
वर्षों चला युद्ध का शोर,
पा वरदान प्रभु ने,
जंघा-मध्य रख सर अक्षत,
चक्र चला,कर दिया विक्षत |

कथा दे रही अध्यात्म-ज्ञान,

कुविचार अपने ही,
उत्सर्जित करते मधु-कैटभ असुर महान |
मद-लोभ-मोह के ये हैं प्रतिक,
ब्रह्म तो है तन,
विष्णु परमात्मन |
तन को डसते ये कलुष दोष,
मार इनको,
जगा मन में परमात्मा,
वध कर कुरीतियों का,
सुखी निज आत्मा |

भाग-३
(माँ दुर्गा का आविर्भाव)

परास्त कर देवों को जब बन बैठा महिषासुर देवेश,
व्यथित देव-गण संग-ब्रह्मा पहुंचे रमेश औ उमेश,
विस्तृत विवरण दे अपने हार का हुए शोकाकुल वे,
सूर्य-चन्द्र-वायु-अग्नि-इंद्र की हार के प्रतिकूल वे |

कैसे हरा यम-वरुण आदि, असुर बना अधिष्ठाता
हे प्रभु निवारण करें, पहुंचे सब-देव निज धाम सहर्ष,
क्रोधाकुल मधुसुदन हुए- रक्ताभ हुए उनके नयन,
क्रोधाग्नि से तनी शम्भू भृकुटियाँ तन हुआ उत्कर्ष |

रक्ताभ मुख से निकला एक विराट तेजोमय प्रकाश,
ब्रह्म-देव-विष्णु-तन-और देवों के तन से भी प्रभाष,
जाज्वल-मान तेज़ पुंज सदृश गिरी शिखर उत्तान,

दिशाएं-दिग-दिगंत, आलोकित-ज्वलित अनुष्ठान |

केन्द्रित हुई तेजोमय आभा जब एक स्थिर बिंदु पर,
उकृत हुआ स्वरुप एक देवी सा, ज्यों इंदु सिन्धु पर |
सब देवौ के तेज की एक नियमतता अद्भुत निराकार,
संलग्न कर सहयोग सब, प्रकटी माँ ले रूप साकार|

देदीप्यमान मुख निर्मित हुआ ले तेज शिव-शंकर का,
वायु से कर्ण, हरि तेज़ से निर्माण हुआ दिव्य कर का,
वरुण-इंद्र-पृथ्वी-ब्रह्म-सूर्य-वसु-कुबेर तेज से निर्मित,
अन्य अंग अंगुली-पिंडली-नासिका देवि के हुए सृजित |

शशि-तेज से बने स्तन, केश बने तेज पा यमराज का ,
दन्त-पंक्तियाँ प्रजापति तेज से, भृकुटी बनी संध्या से,
हुआ अविर्भाव महा-देवि, महा-शक्ति, कल्याणी का,
आतंकित देव हुए प्रफुल्लित, विजय होगी विन्ध्या से |

अस्त्र-शस्त्र से श्रंगारित देवि हुई, ले नारायण का चक्र,
त्रिशूल का एक शूल भी मिला, शक्ति मिली अग्निदेव से,
सु-सज्जित धनु-वाणों के दो तरकश वायु देव ने भी दिए,
एरावत का घंटा-वज्र देवेश से,काल-दंड मिला यमदेव से |

वरुण ने दिया शंख एवं पाश, प्रजापति ने स्फटिक-माला,
कमंडल ब्रह्मा से, भानु ने रोम-रोम आलोकित कर डाला,
विश्वकर्मा ने फरसा,काल ने दी ढाल औ चमकती तलवार,

क्षीर-सागर ने दिया दिव्य चूड़ामणि-कुंडल-उज्जवल हार |

इन अभेद्य कवच- अस्त्र-शस्त्र-श्रिंगार से हो सुसज्जित,
देवि को वाहन मिला केहरी, पर्वत राज हिमालय से,
ललकार जगाने देवि ने ग्रहण नाग-हार किया शेषराज से,
मधुपात्र सेवन को कुबेर से, लिया सिन्धु कामलालय से |

सुसज्जित-श्रंगारित देवी ने किया गगन-भेदी अट्टहास ,
गर्जन-नाद से डोल उठा सकल भूतल-सकल आकाश,
सुर-गण समस्त एकत्रित हो करने लगे देवि-जय-कार
वह सिंहनाद, वह गर्जननाद देवताओं का था प्रतिकार |

<u>भाग-४</u>
<u>(माँ भवानी का महिषासुर से युद्ध)</u>

क्रोधित महिषासुर समझ न सके कारण सिंह-नाद का,
समक्ष देखा,त्रिलोक आलोकित थी देवि निज आभा से
धनुष-टंकार से कम्पित थी दसों-दिशाएं, ये थी डरी सी ,
युद्ध छिड़ा अभूतपूर्व, उद्भासित दिग-दिगंत देवि प्रभा से |

थे सेनापति बलशाली-साहसी-महापराकर्मी दैत्यराज के
चिक्षुर-उदग्र-हनु -असिलेमा-बस्कल-परिवारित-विडाल
सभी थे एक से बढ़कर एक शूरमा, युद्ध-कुशल महादैत्य,
अश्व-रथ-गज- सज्जित थी सेना महिषासुर की विशाल |

भर क्रोधाग्नि वक्ष-वक्ष,
चल पड़ी सिंह वाहिनी,
अरि-दल समक्ष,
चम्-चम् चमक रही,
सौदामनी सी,
कभी यंहा चमक,

कभी वंहा चमक,
क्षत-विक्षत दैत्य मुंड हुए,
रिपु मुंड हुए ,
शव झुण्ड हुए झुण्ड हुए,
टूट पड़ी देवि
समर-कला-दक्ष |
काट अस्त्र-शस्त्र रिपु-दल के,
कभी पाश बंधन,
कभी नाग बंधन,
कभी केहरी गर्जन,
मूर्छित कर रही सैन्य असुर-दल के |

रक्त-वमन कर, आहत, मरने लगे, जब दैत्य भयकारी,
कट रहे मस्तक, जब बरस रही मृत्यु बाणों की बौछार
छिन्न-भिन्न रक्त मुंड दैत्यों के बिखरे पड़े थे चहुँ ओर,
शोणित वेग से बह गए अन-पहचाने,विछत शव उस पार |

तृण और काठ क्षण में जलकर खाख हो होते तहस -नहस,
जगदम्बा-भवानी ने किया असुर दलों को उसी तरह नष्ट |
देव गण आनंदित हो रहे, कर रहे स्तुति गान महादेवी का,
माँ दुर्गा ने प्रकट हो युद्ध कर असुरों से दूर किया देव-कष्ट |

होने लगा दल का नाश देख दैत्य चिक्षुर दौड़ युद्ध को आया,
लगा वह बरसाने बाण ज्यों फट पड़ते हों बादल पर्वत शिखर,
चलाया महा-शूल देवि पर अग्नि-पिंड सदृश, किये नेत्र लाल,
देवि अति शीघ्र आयी रणभूमि, बाणों को किया तितर-बितर |

मार डाला सारथी उसका और मार डाले अश्व

काट डाली धनु-प्रत्यंचा भेद डाला अंग-प्रत्यंग,
ढाल-तलवार से रण को उदद्दुत दानव दौड़ आया,
तीव्र प्रहार से देवी ने किया अंग-अंग, भंग-भंग |

भानु सा तेजवान शूल ला दानव गगन मध्य डोला,
भद्रकाली पर क्रोधित हो महा-राक्षस हमला बोला,
देख प्रचंड शूल आता, देवी ने निज शूल वार किया,
सहस्त्र टुकडों में दैत्य शूल का काम तमाम किया |

चिक्षुर वध देख चामर नमक राक्षस महान गुर्राया,
मल्ल-युद्ध किया उस चामर ने बैठ गजराज सर पर,
केहरी के प्रहारों से, देवी के हाथो से मृत्यु पा गया,
मारे गए सारे दैत्य, महिषासुर हुआ युद्ध को तत्पर |

धर रूप महिष, का विकराल हो रहा था असुरराज,
कभी थूथन से,कभी सींगों से, कभी खुरों का प्रहार,
कभी लपेट अपनी पूंछ पर, फेंक रहा पर्वत विशाल,
साँसे ऐसे छोड़ रहा मानो झंझावत से हिले संसार |

खुरों के चाप से डोले मही, डोल रहा सिन्धु-आकाश,
क्रोधाग्नि में दैत्य सम्राट दौड़ा, देवी वध को आतुर,
उसकी विक्राल दशा देख देख देव हो रहे थे व्याकुल,
रक्ताक्ष-रण-चंडी ने पाश बांध में फांसा महा-असुर |

देख दुविधा,छोड़ भैंसे का रूप, आया विभिन्न रूपों में
कभी मानव, तो कभी सिंह, कभी ,गजराज के भेष में,
उदद्दुत हुई जगदम्बा काट सर, वध करने महिषासुर का,
वह गर्जन करता, केहरी को लगा पूंछ पकड़ ललकारने |

चराचर जगन्माता चंडिका क्रोधित, कर रही मधु पान,

लालिमा-युक्त नयन,निज तेज से हा रहे अग्नि-समान |

दबा पग मध्य, उछल देवी चढ़ बैठी दानव मस्तक पर,
शम्भु के शूल से किया उसने कंठ बीच तीव्रतम प्रहार,
अन्य रूप अभी अपूर्ण ही ले पाया था वो असुर सम्राट,
सौदामनी सी,तीखी तलवार से काट सर, किया संहार |

हुआ महिषासुर का वध, अंत हुआ पाप के शासन का,
अंत तो होता ही है, जब अनाचार अधिक बढ़ जाता है,
अंतर्मुखी होती जब कामना, अंकुश लगाना ही पड़ता है,
सत्य-विजय की देवी लेती प्राकट्य तिमिर छट जाता है ||

गर्तिविनाशनी
भाग-५
(देवताओं का दुर्गा देवी को आभार)

हुआ अंत असुर सम्राट महिषा-सुर का,
हुआ समाप्त देव-सुरों का त्रसित तडपन,
हुआ अंत पाप -अनाचार-अत्याचार का,
करने लगे देव-गण माँ दुर्गा का स्तवन |

देव-सम्राट ने किया झुक प्रणाम साष्टांग
प्रसन्न हुई दुर्गार्तिविनाशनी देवी अम्बिका
रोमांचित हुई, हर्षित हुई-हुई माँ उत्साहित,
हर्षित देख देव गण स्तुवन किया अम्बे का |

तू शक्ति समुच्चय देवों का प्रज्ज्वलित हो,
तू पूज्य सब देवों की, हो अति-आदरणीय ,
ब्रह्मा-विष्णु-महादेव भी कहते तू अवर्णीय,
कल्याण कर दुर्गे तू, आभा तेरी अनुपमिय

भय का नाश करे तू,
तू तो माँ पालन हारी,
लक्ष्मी-रूप तू-दीनो की रखवारी |
बुद्धि रूप तू ,
आ पालन कर,

हम सब का विश्वास,
मान्यता रहे यूँ ही ,
तू करे असुरों का नाश |
नारायण-शिव-शंकर भी
पा न सके तेरा पार,
तेरा आश्रय
तेरा ही अंश जग सारा,
तू अव्याकृता-परा,
तू अपरम्पार |
तुझ में ही समाये छवों ऐश्वर्य,
सृष्टि की जननी तू,
तू कमनीय,

आप में ही है मेघा-शक्ति का चातुर्य |
हुई मुख-आभा अरुनिमायुक्त
महिषासुर भी हुआ प्राणों से च्युत |
कौन है त्रिलोक में जो
आपके क्रोध को सह सके,
कौन है ऐसा जो,
आपके प्रति-रोध को सह सके |
आप फल दायनी,

असुर चक्षु विक्षित हो रहे, देख तेज़-पुँज विकराल,
क्षत हुए नही वे क्यूंकि दर्शन हो रहा मनोहर भाल,
माँ श्री-मुख अतुलनीय करता अरि-पराक्रम नष्ट,
आप ही माँ हरे शत्रु-भय, त्रिलोक का भी हरें कष्ट,

नमस्कार देवि, नमस्कार चण्डिके, रक्षा करें आप,
घंटा-शूल-खडग धारिणी, दसों दिशाए हरें संताप,
अनेकानेक रूप से आप आती, होती माँ जग- प्रकट
क्षमा कर त्रुटियाँ, निवारानन करें समस्याएं विकट |

पुजा विविध भांति, प्रसन्न हुई माँ, सुन स्तुति गान,
माँ बोली बतलाये अभिलाषाएं आपकी, मांगे वरदान |
कर-जोड़ सभी देवों नि की अर्चना माँगा अभय दान,
महिषासुर का वध हुआ, संकट से परे अब देव-स्थान |

हे माँ दुर्गे बस वर इतना दीजिये ,करें जब आह्वाहन,
स्मृति हो मन में आपकी तब-तब, दे दर्शन बढ़ाएं मान,
शीघ्र आ आप करें दूर संकट देवों का, दें आशीर्वचन,
तथास्तु कह देवि विन्ध्य निवासिनी हुई अंतर्ध्यान |

भाग-६
(देवी-वंदना)

नमस्ते,
हे दुर्गतिविनाशनी,
बसती हो आप सब भारतियों के दिल में,
दक्ष हो, आप सेना सञ्चालन में,
हे काली,हे कपाली, ,हे चण्डिके,
हे कात्यायनी, हे जग तारिणी,
नमस्कार,
हे महिषासुर प्राणहर्ता,
हे पीत वासिनी,
रण में आपके अट्टाहस मात्र से
मृत्यु होती शत्रुओं की,
हे उमे,
हे सुधुम्राक्षी
वेद का सार तुम,
तू ही संध्या, तू ही सावित्री,स्वाहा,स्वधा,

सब ही हो तुम,
हे मात
तुझे शत शत नमन
तुझे शत शत नमस्कार |

महा निंद्रा का स्वरुप तुम,
योग माया तुम,
सकल ब्रह्म-विद्या तुम,
हे महा देवी,
तू निवास करती इस विशुद्ध अंतरात्मा में ,
मेरे जितने भी भय हैं,
सब आपके स्मरण मात्र से दूर हुए जाते हैं,
हे मोहिनी, हे जगदम्बे, हे सिद्ध-चारिणी,
तुझ कोटिशः नमस्कार |

भाग-7

(देवों का स्तुति कर माँ दुर्गा का आह्वाहन)

पूर्व -काल में हुए दो असुर शुम्भ-निशुम्भ अति आततायी,
अपने महाबल से जीत लिया त्रिलोक शचीपति इंद्र देव से,
सूर्य-चन्द्र-कुबेर-यम-वरुण सब देव हो गए उसके अधीन,
कर अपमानित,अधिकारहीन उन्हें,बना राजा स्वयमेव से |

तिरस्कृत देवताओं ने उस जगदम्बा देवी का किया स्मरण,
दिया वर था अपराजिता देवी ने प्रकट हुंगी जब करोगे याद,
तत्काल समस्त विपत्तियाँ करूँगी नाश, विचार ऐसा मनन
कर पहुंचे देव-गण गिरिराज हिमालय करने को फरियाद |

नमस्कार है महादेवी को नमस्कार है हे शिवा देवी नमस्कार,
प्रकृति, भद्रा देवी नमन तुझे, कर-बद्ध प्राथना प्रतिदिन करते,
रौद्र,नित्य,गौरी,धात्री,ज्योत्सनामयी, सुखस्वरूप देवी प्रणाम,
हे सिद्धिरूपा देवी करती कल्याण तुम वे जो शरणागत रहते |

हे राज्य-लक्ष्मी, रूप-लक्ष्मी, असुर-लक्ष्मी, शिव पत्नी-रूपा,
दुर्गा-दुर्गपारा-सारा-सर्व कारिणी-धुम्रादेवी नमस्कार तुझे,
तू अत्यंत सौम्य-मयी, रौद्र-रूपा माँ कोटि-कोटि प्रणाम तुझे,
हे जगत आधारभूता कृति-देवी,हमारा नमन बारम्बार तुझे |

चेतनाभाष भी तू, बुद्धि-रूपेण भी तू, तू ही निंद्रा-क्षुदा-छाया,
विष्णु-माया बन समाहित तू सर्वप्राणियों में नमन-नमस्कार,
तू बन ये सब बसती सब जीवों में नमस्कार, बारम्बार नमन,
शक्ति की साक्षात् देवी तेरा प्रकाश घट-घट में, नमस्कार |

तुझसे तृष्णा, क्षमा, लज्जा, शांति विराजमान ह्रदय भीतर,
तू ही जाति प्रमुख, तू श्रद्धा-प्रतिक, देती कान्ति तू ही माँ,
लक्ष्मी-सरस्वती-उमा का समागम तू, है माँ लक्ष्मी-रूपा तू
नमस्कार,नमस्कार, बारम्बार नमस्कार योग्य तू ही माँ |

वृत्ति आधारित तुझसे, स्मृति आलोकित तुझसे, तू दया की,
मूर्ति बन समायी जन-जन में, तुझे कोटि-कोटि नमस्कार,
तुष्टि तू, तू माँ स्वरुप, भ्रान्ति-रूपा तू, नमन-वंदन-नमस्कार,
जीवों में इन्द्रिय वर्ग- अधिष्ठात्री देवी कोटि-कोटि नमस्कार |

हे देवी ज्यों पूर्वकाल में आपने देव-कुलों का संरक्षण किया
स्मरण में आते ही ज्यों आपने विपत्तियों का किया नाश,
आज उद्दंड असुरों से त्रसित समस्त देव-पुरुष नमन करते,
हे जगदम्बा प्रकट हों हर-संकट, शत्रुओं का कर विनाश |

सुन देव-पुकार प्रकट हुई संकटहारिणी देवी धर रूप उमा का,
मनोहर नयन, उत्त्कर्ष भृकुटी, शांत तन था, उत्सुक मन था,
सुन देव-व्यथा, सुन कथा शुम्भ-निशुम्भ की, तपित तन था,
प्रादुर्भाव हुआ अम्बिका का कौशिकी बनी, क्रोधित बदन था |

<u>भाग-८</u>

(शुम्भ-निशुम्भ का देवी के पास दूत भेजना)

शुम्भ-निशुम्भ के द्वय भृत्य चंड-मुंड दानव,
दृश्य देख अनुपम-परम-मनोहर रूप-छटा को,
अति-शीघ्र पहुँच दानव-राज के समक्ष बताया,
एक नारी कर रही कान्तिमान मोहित घटा को |

हे असुरेश्वर रूपसुंदरी, मनोहरी, देखी नही ऐसी,
आप ज्ञात करें देवी कौन जो आलोकित कर रही,
है प्रकाश-मय हिमाला, रत्न-श्रेष्ठ,सर्वांगी,बाला,
करें आप रूप लाभ,अभी भी पर्वत-राज रह रही |

हे असुरासुर आप तो स्वामी त्रिलोक के, शोभित
रत्न-भण्डार,पारिजात,एरावत,उच्चैश्रवा घोडा,
जीत कर देवराज से किया आपने निज भंडार ,
ब्रह्मा से भी युद्ध में पाया आपने हंसों का जोड़ा |

कुबेर से छीन ली महा-पद्म निधि, किन्जाल्किनी
माला ली समुद्र से, जिसके कमल मुरझाते नही,
है आपके पास छात्र वरुण का जो है अपरम्पार,
प्रजापति का रथ,उत्क्रांतिदा शक्ति यम की सही |

प्राप्त अग्नि से उनके दो वस्त्र, होते जो शुद्ध स्वतः,
सभी लोकों के धन-रत्न-मणि-स्वर्ण किये एकत्रित,
रूप-वान नारी वह एक मात्र क्यूँ रहे आपसे वंचित
उस कल्याणी-देवी की प्राप्ति हेतु हों आप प्रायोजित |

सुन चंड-मुंड का यह सत्यापन, महादैत्य ने की न देर,
सुग्रीव दूत था अनुभवी भेजा उसे तत्काल, बुलाने दुर्गा
आदेश दिया कहना कुछ चतुराई से प्रसन्न हो आये वो,
दूत कर प्रस्थान आ पहुंचा रमणीय स्थल जंहा थी दुर्गा |

दैत्य राज का दिया सन्देशा पहुँच समक्ष देवी अम्बा के,
मधुर स्वर में बतलाया, ऐश्वर्य शुम्भ-निशुम्भ मान का,
तीन लोक के स्वामी वे, दूत हूँ उन महाप्रतापी बली का,
देवों को जीता उसने, सुना रहा वर्णन दैत्य अभिमान का |

देवराज इंद्र की सर्व-सम्पदा अब उनकी, भोग समस्त
पृथ्वी के उनको मिलते, रत्न-एरावत-उनके अधिकार में

हे रूप सुंदरी तुम होती रत्न समान, स्वीकार करो राजन,
बुद्धि से विचार कर बन पत्नी पाओ सुख-प्राप्य संसाधन |

सुन कथन दूत का, मुस्कराई कल्याणी गंभीर भाव से,
सत्य वचन, नही मिथ्या, संशय नही मात्र भी शब्दों में,
शम्भू स्वामी त्रिलोक का, निशुम्भ वीर-पराक्रमी अद्भूत,
की प्रतिज्ञा पूर्व में अल्पज्ञानी, बंधी प्रतिज्ञा की हदों में |

जीत जो जायेगा समर में मुझे, वरन करूँ उसीका केवल,
मानती शुम्भ-निशुम्भ विचित्र योद्धा आयेंगे अवश्य यंहा,
चूर-चूर मेरा अभिमान होगा, विजयी कर ले जायेंगे मुझे,
कहो दूत अपने स्वामी से, आ विवाह करने आय यंहा |

दूत था चतुर, जान अभिप्राय जग जननी जगदम्बा का,

बोला हे देवी इतना गर्वान्वित न हो, जान असुर-राज को
त्रिलोकी में नही कोई ऐसा जीत सके उन बलशाली को,
तुम अकेली अबला कैसे जीत पओगी राक्षस सम्राट को |

देवी ने तत्काल कहा मै अबला कर गयी भूल प्रतिज्ञा कर,
जाओ जाओ दूत अभी जा बुला लाओ न अब अवज्ञा कर |

भाग-९
(धूम्रलोचन-एवं चंड-मुंड वध)

अमर्ष हुआ दूत को सुन कथन देवी रानी का,
सविस्तार वर्णित किया प्रसंग असुर-राज को,
क्रोधित दैत्यासुर ने बुलाया सेन्यदल पति को,
धूम्रलोचन उपस्थित हुआ आज्ञा शिरोधार्य को |

जाओ जाओ शीघ्र जाओ मेरे प्रिय तुम जाओ,
उस नारी को समक्ष लाओ, दूर करूँ अहंकार,
रोक रहा हो कोई भी मार उन्हें, उसे लाओ,
ले आज्ञा चला धूम्र लोचन, भर कर ललकार |

पहुँच देवी के पास बोला, चल अब तू चल वंहा,
नहीं चली तो, केश पकड़ ले चलूँ, तत्काल वंहा,
लालिमा-युक्त हुई देवी ,पर रख कर धैर्य-संयम
तुम भी वीर, संग सेना, युद्ध बिना जाऊं कंहा |

दौड़ लपका धूम्र-लोचन, मारने को था व्याकुल,
हुंकार भरी देवी ने भयंकर, देख उन्हें तत्पर,
तीरों, फरसों, तलवारों की हुई वर्षा चंहु-ओर
गर्जना करते केहरी भी कूद पड़ा रिपु दल पर |

हुआ खाख दैत्य धूम्रलोचन अम्बा के हुंकारे से,
मारी गयी बाकि सेना केहरी-पंजों की मारों से,
काट-काट,फाड़-फाड़ खा गया वो भूखा सिंह,
समाप्त हुई सेना समस्त सिंह के संहारों से |

जान शुम्भ-निशुम्भ ने ,धूम्रलोचन का काल,
लाल नेत्र किये बुलाये चंड-मुंड दैत्य विकराल
करो प्रस्थान रिपु-दल को लिए सेना विशाल,
लाओ उस नार को जीवित या मृत तत्काल |

चतुरान्गनी सेना सुसज्जित अस्त्रों-शस्त्रों से
लिए संग दैत्य भयावह, चंड-मुंड चले रण को,
पहुंचे वे गिरिराज हिमालय के उच्च-शिखर
देखा सिंह-वाहिनी देवि दुर्गा के अद्भूत रूप को |

मुस्कराई मंद-मंद माँ उद्दम देख अरि-दल का,
तान धनुष, निकाल खांडा, रिपु चढ़े अम्बिका,
इतनी क्रोधित हुई अम्बा की मुख हुआ श्याम

भृकुटी तन गयी, प्राकट्य हुआ माँ श्यामा का |

था काली- भैरवी देवी का रूप अत्यंत भयंकर,
नर-मुंड-माल विभूषित चर्म-वस्त्र सज्जित थी,
अस्थियाँ ही अस्थियाँ मात्र तन की दिख रहीं
विशाल,कराल,मुख,जीभ लाल अवलोकित थीं |

रक्ताक्ष चक्षु डरावने से धंसे थे अन्दर की ओर
कर-रही भीषण नाद-गर्जन-बढ़ चली रिपु मर्दन,
टूट पड़ी अरि-दल पर तीव्रगति से करने भक्षण,
कंही यंहा पड़ी कभी वंहा काटी दैत्यों की गर्दन |

उखाड़ बाल, काट ग्रीवा, कुचल-कुचल मार रही,
क्रोधित दंत मध्य चबा-चबा असुरों को खा रही,
रोद्र रूप ने किया काम तमाम राक्षस सेना का,
खट्वांग से कई मारे , माँ उन्हें मज़ा चखा रही |

पल-भर में मारा जान दैत्य दल ,चंड झट आया,
महा-असुर मुंड भी संग संग ही रण करने आया,
चला चला सहस्त्र बाण गगन आच्छादित किया
चक्रों से भिमाक्षी देवी के मुख को प्रलोकित किया |

ज्यों कोटिशः भानु प्रवेश कर रहे हो मेघ मंडल में,
वैसे ही विक्राल गर्जन- भयकारी अट्टहास किया,
उज्जवला हो गयी विराट वदना माँ दंत प्रभा में,

हं घोषित कर धर केश सर चंड का काट दिया |

वध चंड देख, मुंड चंडिका को पकड़ने दौड़ आया,
तलवार के एक ही वार से उसे सदा के लिए सुलाया,
काली लिए चंड-मुंड मुंड हाथ अंबा को सब कहा,
मुंड लिए दुर्गेश्वरी देवी ने काली को चामुंडा कहा |

भाग-१०
(रक्त-बीज वध)

सिद्ध-मयी-प्रभावारी, अणिमा, भवानी को
लाल-लाल शारीर वाली, करुनामयाक्षी को,
पाश-अंकुश-शर-धनुष -खडग धारिणी को,
नमस्कार-नमस्कार-बारम्बार नमस्कार |

सुन महा-प्रतापी दैत्य के मन में आया ताप
वध हुआ वीरवान-बलवान चंड-मुंड का जो,
सुना सम्पूर्ण सेन्य-दल का संहार भयावह,
शुम्भ-निशुम्भ-क्रोधित बुलाया सब को वो |

रक्त-बीज अति मायावी, दुर्दांत राक्षस एक,
उदायुद्ध उपाधित छयासी सेन्य-पति भेजे,
ले काम्बू नाम के चोरासी दलों को भी साथ
सेन्य-वाहिनी घिरे व्यूह रचना करते ये बढे |

पचास कोतीविर्य कुल के,शत धौम्र कुल के
कालक, दौह्रुद, मौर्य, कालिकेय दानावासुर,
आज्ञा सुन दैत्य सम्राट की चले वे युद्ध को
दुह्शाषक दानवराज इस भांति चला आतुर |

आ रही दानवों की विराट सेना संग धुरंधर,
चंडिका ने किया भीषण नाद टंकार धनु से,
भूतल-नभ हुए कम्पित टंकार की गुंजन से,
तदन्तर सिंह-दहाड़ से कम्पायमान मन से |

मुख बड़ा कर दिया विकराल रूप धर काली ने,
तुमुल स्वर-नाद सुन, आये चहुँ ओर दैत्य सभी,
घेरा लिया अम्बिका को थे क्रोधाग्नि से भरपूर,
देख रहे थे ऊपर दृश्य माँ की छटा का देव सभी |

ब्रह्मा-उमेश-कार्तिकेय-रमेश-देवेश ने निकाल
निज-निज शक्तियां भेजी स्व-रूप में तत्काल,
आयी शक्तियां निज स्वरुप वेश ओ' वाहन में
शक्ति-शाली, बलशाली, तेजोमयी, विकराल |

ब्रह्म-शक्ति हंसारुढ़ अक्ष-सूत्र ,कमंडल शोभित,
ब्रह्माणी नाम से संबोधित शक्ति पूज्यनीय वो,
वृषभ पर विराजित लिए श्रेष्ट त्रिशूल महादेव का,
चन्द्र-रेखा, महानाग का धारण किये कंगन वो |

मयुरासित हस्त-जगदम्बिका शक्ति कार्तिकेय की,
विष्णु शक्ति आयी शंख-चक्र-शान्ग्र्धनुष-गदा लिए,
अनुपम शक्ति श्री हरी की धारण किये वराह-शरीर
नरसिंह शक्ति नृसिंह सी तारे टूटे टेढ़ी ग्रीवा किये |

इंद्र-शक्ति वज्र-धारित, एरावत पर शोभित भी आयी,
सहस्त्र-नैनो वाली ज्यूँ इन्द्र हो उपस्थित निज यंहा,
कहा महादेव ने शक्ति-आच्छादित रन चंडिका से,
प्रसन्नता मेरी लिए देवि अब दैत्य संहार करो यंहा |

प्रकट हुई परम उग्र -चंडिका अति-भयावह रूप लिए,
निवेदन किया महादेव से जाएँ वे समझाने दैत्यों को,
कंहे अहंकारी शुम्भ-निशुम्भ से और दानव दल को,
करे वापस त्रिलोक देवराज को और लौटे अतल को |

शंकर की सुन बातें अम्हर्ष में भरे क्रोधित हुए दैत्य,
बरसाने लगे वे बाण-शक्ति-सृष्टि आदि अस्त्र वंहा,

यूँ चुटकियों में देवी ने काट दिया छोड़ तीक्ष्ण शर,
काली ने बढ़ आगे शूल प्रहार से किया अघात वंहा |

महाश्वरी ने कार्तिकेय की शक्ति चला किया संहार,
छिड़क कर जल ब्रह्म कमंडल का ओज हीन किया
वज्र-प्रहार से सहस्त्रो को धराशायी कर विदीर्ण किया,
वाराही शक्ति ने थूथन से शत्रु-दल समूल नष्ट किया |

इस प्रकार भाग खड़े हुए दैत्य-सैनिक छोड़ रण-भूमि,
रक्तबीज महा-दैत्य एक महा-पराक्रमी क्रोधित आया,
मायावी वो वर था उसे प्राप्त, जन्हा जन्हा रक्त गिरे
सम-शक्ति-वान दैत्य उत्पन्न होता हर बूंदों से वंहा |

महा संग्राम हुआ देवि और रक्तबीज के बीच भयावह,
चला रहा गदा रक्तबीज लड़ रहा इद्र्य शक्तियों से
चलाया वज्र देवि ने आहत हो गिरा शोणित बह चला,
पुरुष बलवान उत्पन्न हुए तुरंत उतने ही लहू बूंदों से |

युद्ध होने लगा भयंकर,
रक्तबीज ही रक्तबीज दिख रहे प्रलयंकर,
भयंकर रक्तबीज,
वीर्यवान रक्तबीज,
कर प्रहार
हो प्रहार,

शोणित पर शोणित,
फिर उतने दैत्य,
घनघोर मंजर,
चले देवि का चक्र
तो चले असुर का खंजर,

मंडित विश्व सहस्त्रो रक्तबीज,
देव गण निराशित,
चंडिका-चंडिका,
बनी काली चामुंडा,
विशाल मुख,
विशाल जिह्वा,
पी रही रक्त
काट-काट शीश,
अब रक्त नही भूमि पर,
मुस्कराहट आयी देवों के मुख पर,
कहा कालिका-चामुंडा से,
देवि चंडिका ने ,
रक्त भक्ष करती रहना आप,
शूल चला तीक्ष्ण
मार दिया रक्तबीज अम्बिका ने |

लहू अत्यधिक बहा शूल प्रहार से दैत्य-पति का,
सहर्ष धर लिया मुख -जिह्वा पर चामुंडा देवि ने,
रक्त के सेवन से कई दानव उत्पन्न हुए मुख में,
चाट लिया, खा लिया, रक्त हीन कर दिया माँ ने |

रक्त विहीन रक्त बीज अब कंकाल बन भूमि पर,
विक्षित पड़ा, प्राण विहीन अहंकारी अब भूमि पर,
हर्षित हुए देव समस्त नृत्य कर रहे हिमभूमि पर,
अब विचलित शुम्भ-निशुम्ब स्वयं रण-भूमि पर |

भाग-११
(निशुम्भ-वध)

शशि शीश मध्य विराजित,
कल्हार-बद्ध-माल शोभित,
रक्त-वस्त्र-शंख-हस्त अर्पित,
मधु मंद-मंद अंकित,
मात सर्वांगी-ध्यानाकर्षित |

रत्न-जडित सिंहासन विराजनी,
गिरी-राज हिम-शैल वासिनी,
श्याम–वर्ण, सरोज-पद धारिणी,
देवी-देवी अभिनन्दन !

अर्ध-नारीश्वर देवी,श्री-विग्रह रूपेण मात,
शरणम-शरणम,
त्रिनेत्री-अर्ध-चन्द्र आभूषित
देवी, दुर्गे देवी
शरणम-शरणम |

सुना सभी ने अद्भुत कालिरूप देवी का
गल मुंड माल लिए खप्पर धारी देवी का,
क्रोध-वश देवी न होरही शांत विचर रही,
थर्राए देव-दानव माँ अब नही संभर रही |

प्रसंग ऐसा पुराणों में वर्णित किया गया,
स्पंदित महादेव थे कम्पित संसार सारा,
कैसे हों शांत देवी, सबने मन में विचारा
किया निवेदन शंकर आप ही का सहारा |

काली माँ क्रोधित बढ़ी जा रही थी मार्ग,
शिव जी ने तत्काल निज को बीच डाला,
देख न पायी महादेव को पग से छू डाला
पद-स्पर्श से हुई शांत काली विकराला |

उधर शुम्भ-निशुम्भ क्रोधित करें प्रयत्न,
है विशेष नही आम रक्तबीज वध करने,
भर क्रोध मन में, संगृहीत सेना विशाल,
चढ पड़े वे देवी पर लिए शस्त्र विकराल |

छिड़ा घोर युद्ध शुम्भ-निशुम्भ से देवी का,
पार्श्व-भाग में थे असुर रण-बांकुरे प्रधान,

सभी लाल-लाल हुए जा रहे देवी वध को
ओउष्ट चबा रहे क्रोधित हो दानव महान |

ध्येह यही, लक्ष्य यही, बाण वही, ढाल वही,
शर पर शर चल रहे, वर्षा हो रही बाणों की,
दोनों यूँ बरस रहे ज्यूँ बरसा बरसे मेघों से,
देवी हस्त लाघव निपुण रोके संधानो से |

प्रहार किया निशुम्भ ने लिए ढाल तलवार,
चम्-चम्-चमक रही कर रही सिंह पर वार,
चला क्षुरप बाण काट दी तलवार की धार,
अस्ट्चंद्राकर ढाल के कर दिए टुकड़े चार |

कटी जब असुर की वो चमत्कारी तलवार,
क्रुद्ध हो चलायी शक्ति देवी समक्ष तत्काल,
दो-भाग दैत्य शक्ति हुई देवी-चक्र से तुरंत,
रह न पाया दानव देख शक्ति का ये हाल |

क्रोधाग्नि में जल निशुम्भ गदा चला रहा,
चंडी भी चला त्रिशूल, दैत्य-शूल काट दिया,
भारी फरसा हाथ लिए आक्रमण को दौड़ा,
वर्षा शरों की कर, मूर्छित उसे सुला दिया |

देख निशुम्भ मूर्छित, शुम्भ आवेश में आया,
वध-अम्बिका हेतु, आया उत्तम आयुध युक्त.
सुसज्जित था वो आठ भुजाओं से रथ पर,
यूँ नभ पर शोभित, दामिनी प्रहार प्रत्युक्त |

शंख-नाद, धनु-टंकार, से गगन गरज रहा,
देवी के दुस्सह अट्टहास से रिपु-दल डर रहा,
एरावत के घंटों से भीषण गुंजन भयकारी,
दसों–दिशाएँ दिग्भ्रमित सिंह दहाड़ कर रहा |

अवनी-अम्बर-अतल सभी थे विकल–विकल,
उछल काली ने हाथों से दिया पृथ्वी पर चाप,
भयंकर भयकारी भूकंप नाद हुआ दिग्दिगंत,
थर्रा उठे असुर-गण सारे देख नारायणी ताप |

नभ मध्य देवगण जय-घोष करने लगे देख
गर्जित देवी रही दुरात्मन शुम्भ को ललकार,
अग्नि-शक्ति चलाई असुर शम्भू ने तत्काल,
निरस्त किया अम्बिका ने लगा जल-अम्बार |

शुम्भ भी चिंघाड रहा, तीनों लोक गुंजायमान,
प्रतिध्वनित गूंज सदृस वज्रपात प्रतीत हो रही,
तीर पर तीर चल रहे बरस रहे अस्त्र पर शस्त्र
ऐसा भयंकर रण था अचंभित प्रकृति हो रही |

कट रहे शस्त्र,
कट रहे अस्त्र,
कभी तीर इधर चला,
कभी शर संधान उधर हुआ,
रणभेरी बज रही चहुँ ओर,
शूल पर त्रिशूल चल रहे,
देवी पर कभी शुम्भ,
कभी शुम्भ पर देवी भारी थी,
चंडिका का कोप प्रलयंकारी,
चला-चला शूल,
चंडिका ने गिरा दिया शुम्भ धरा पर,
कर आहात,
निशुम्भ चेतस हो,
धनु-बाण लिए,
लिए सम्पूर्ण तेज-आवेश,

घायल किया केहरी,
सहस्त्र भुजा लिए दुष्ट निशुम्भ,
चक्रों के वार किये जा रहा,
युद्ध पराकाष्ठा की ओर
बढ़ा जा रहा |

दुर्गर्तिविनाशनी दुर्गा ने करने को नाश
कुपित हो निशुम्भ को ललकारा युद्ध में,
तीव्र-तेज तलवार एक ले चंडी ने काटी
गदा दुष्ट निशुम्भ की हाहाकारी युद्ध में |

चंडिका ने शूल हाथ लिए बेध डाली छाती,
ले चंडी ने खडग निशुम्भ सर काट दिया
सिंह भी गर्दन असुरों की खाने लगा था,
शीवदुति ने अन्यायी दैत्यों को चाट लिया

महेश्वरी देवी के हाथों असुर मौत पा रहे,
वाराही के थूथन से कुचल प्राण गँवा रहे,
वैष्णवी के चक्र से टुकड़े हजारों हो रहे,
ऐन्द्री के वज्र से पिस-पिस असुर मर रहे |

इस तरह असुर निशुम्भ-संहार के प्रसंग
का हुआ अंत अनुपम,
देवी-देवता बता रहे रण-चंडी के प्रताप
को अनूठा ह्रुदयोत्तम |

भाग-१२
(शुम्भ-वध)

हे रक्ताम्बर धारिणी,
रक्त-पुष्प माल शोभिते,
हे केहरी वाहन विराजिते,
खडग-खप्पर-शंख-त्रिशूल,
कर-मध्य धारिते,
हे दुःख हर्ता देवी,
हे दुर्गति नाशनी माँ,
सुन्दर रूप सजे ,
नासाग्र मोती,
कुंदन-कुंडल,
शीश ऊपर चन्द्र-भानु,
शोभा निराली,
हे देवी,
मधु-कैटभ,
धूम्र-विलोचन,
महिषासुर,
चंड-मुंड,
रक्तबीज,

निशुम्भ को मार,
दुःख हरे देवन के,
आप सूर्य-चन्द्र-अग्नि को
तीनो नेत्रों में बसाये हुए,
अंकुश-पाश-शूल लिए
शीघ्र शुम्भ को करें समाप्त !

मेघा ऋषि आगे बता रहे युद्ध का हाल,
शुम्भ सुन प्राण-तुल्य भ्राता का निधन
और सुना दुखद अंत अपनी सेना का
कुपित हुआ,आवेशित हुआ, तन - मन |

कहा दुर्गे न इतरा बल के अभिमान से,
अहंकार न ला झूठी जीत और शान से,
लड़ रही तू ले सहारा अन्य-स्त्री बल से,
लड़ रही   तू साथ किसी शक्ति-बल के |

दुष्ट ! मै अकेली कौन मेरा मेरे सिवा,
विभूतियाँ हैं मेरी, चलें बन मेरी छाया,
प्रवेशित मुझमे ये, निकलती मुझसे ये,
समां गयी सारी विभूतियाँ दूर हुई माया |

मै आयी थी अपने अनेकों रूपों में लड़ने,
समेट सभी को खड़ी मै अकेले यूँ लड़ने,
तुम भी हो जाओ तैयार, हो जाओ स्थिर,
इस भांति छिड़ा युद्ध भीषण दोनों में फिर |

दिव्यास्त्र देवी के काटे असुर सम्राट ने
उसी भांति जैसे काटी थी अम्बिका पहले,
दुर्दांत-अस्त्र , भयंकर शस्त्र ,दारुण दृश्य
देख देख युद्ध दो बलियों का दिल दहले |

युद्ध था अपनी चरम सीमा पर चल रहा,
रण-अम्बिका को मारने हेतु धावा बोला,
लिए शत-चन्द्र चमकती ढाल तलवार ,
दैत्य-स्वामी दुर्गा पर करने लगा वार |

काट दिया सूरज सी चमकती ढाल को,
टुकड़े हुए दैत्य की तलवार के,देवी से,
मारने लगी रण-चंडी अश्व-सारथि सभी,
देख नज़ारा, उद्दत रण को आया देवी से|

तान मुक्का झपटा दैत्य देवी के ऊपर,
देवी ने घूम घूम उसे लगाये अनेक चांटे,
थप्पड़ की मार से गिरा असुर भूमि पर,
उठा तुरंत पूर्ववत कर दूर नैन सन्नाटे |

मायावी माया दर्शा रहा उड़ उड़ गगन,
कभी गगन पर तो बादल पर उदघोष.
देवी भी पहुँच नभ करने लगी संग्राम
उनमे गगन मध्य अद्भूत युद्ध आक्रोश |

समर विचित्र-संग्राम कलाएं अनुपम थी,
सिद्ध-मुनि भी विस्मय में थे रण देख के,

कुछ समय यूँ ही युद्ध चला देवी-दैत्य में,
अम्बिका, चंडिका ने फेंका अतिरेक से |

धरा पर पड़ा दानव दौड़ा दुर्गा को मारने,
समक्ष पा उसे देवी ने पा समय अनुकूल ,
वक्ष बेधन किया तत्काल आहात किया
प्राण छूटे उसके जब लगा देवी - त्रिशूल |

अतल, भूतल, गगन , हो गए थे कम्पित
मारा जब वो दुराचारी, अत्याचारी,पतित |

अब मेघ भी शांत थे ,
जो कर रहे थे उल्कापात,
उफनती नदियाँ भी,
मनोहर मंथर-मंथर बहने लगी,
प्रफुल्लित थे देव गण,
आल्हादित थे त्रिदेव भी,
बजाने लगे गीत विजय के गन्धर्व,
नृत्य करने लगी अप्सराएं जो सहम थी गयी,
शीतल पावन पवन अब थी,
शशि किरणे भी माध्यम से उत्तम हो गयी |
गजराज भी मोदित हो रहे
उठा उठा मदमस्त सूंड,
स्वतः प्रज्ज्वलित हो उठे
ऋषि यग्य-कुण्ड |
मनमोहक दृश्य था देव-धाम में,
थे तीनो-लोक मग्न खुशियों के आयाम में |

भाग-१३
(देवि-स्तवन)

विनाश हुआ दैत्य-वंश,
हत् हुआ शुम्भ
गगन दुन्दुभी बज उठी,
देवेश स्वयं आ अनल साक्षी मान,
देवि कात्यायनी का करने लगा गुणगान |
राजिव-मुख उद्दीप्त था,
जगमग-जगमग हो रही,
दसों दिशाएं,
रवि –रश्मियों सा आभावान |

हे विश्वेश्वरी !
हे शरणागत कष्ट हरिणी,
प्रसन्न हो,
कर रक्षा विश्व की,
तू ही आधार,
तू ही पृथ्वी रूप धारिणी |

चमक रहे चम्-चम्,
अरुणोदय की लालिमा से
तेरे लाल-लाल वस्त्र,
आलोकित हो रहे
विजय की आभा से
तेरे अनोठे शस्त्र |
देवि उल्लेखनीय पराक्रम,
अलन्ख्नीय सत्कर्म |

देवि सागर बन, तृप्त कर रही हो जग सारा,
तु ही ब्रह्म सनातनी, ब्रह्मचारिणी ओमकारा,
तु बल सम्पन्न देवि वैष्णवी शक्ति विस्तारा,
तु देवि विश्व कारणभूता परामाया बारम्बारा |

तु ही जग्मोहिनी, तु ही जगन्माता, तु मोक्ष,
विभिन्न विद्याएँ विभिन्न रूपेण तुझ में होती,
तु ही माँ संवरती सब नारी मन में बन मूर्ति

जगदम्बा मात्र तु सम्पूर्ण जगत को संजोती |

माँ बना हमें इस लायक की करें तेरा वंदन,
तु माँ परे वाणी के शब्दों से, कैसे हो स्तुवन |

हे नारायणी देवि नमन, मोक्ष–स्वर्ग प्रदाता,
उक्तियाँ, अभिव्यक्तियाँ जानती तू सर्वज्ञाता,
तू कला तू ही काष्ठा, तू ही परिवर्तन कर्ता
नमन तुझे विश्व संरक्षक, तू ही समर्थ माता|

शिवा मंगलदायिनी, कल्याणी, सिद्धि-दात्री,
शरणागत-वत्सला-गौरी-पुरुषार्थक-त्रिनेत्री,
शक्तिभुता संहारक, सृष्टि पालक, सनातनी,
नमस्कार देवि, गुण आधार -देवि सर्वान्गनी |

शरणागत, दीन, परिताडीत, की पीड़ा तू हरे,
नारायणी देवि ब्रह्मानी रूप धर कष्ट दूर करे,
नभ विहारिणी अमृत रूप जल जीवन में भरे,
त्रिशूल, चन्द्र, सर्प, धारिणी अम्बे नमन करें |

शंख-चक्र-गदा-शांग्र धनुष, आयुध् हस्त धरे,
प्रसन्न हो देवि मात, करबद्ध प्राथना हम करें,
तू वैष्णवी, तू शक्तिस्वरूप, वराह रूप धारिणी,
कल्याण कर, नरसिंह रूपा, दुर्गे माँ विभावरे |

माँ तेरे नयन सहस्त्र दीप-किरणों से उद्दीप्त ,
माँ इंद्र-शक्ति-रूपा, वृत्रासुर प्राण हरने वाली,
विकटगर्जना, आक्रमक तेज, संहारक काली
अभिनन्दन माँ शिवदूती विनाश करने वाली |

हे चामुंडे, हे मुंड-मर्दिनी, मुंड-माला विभुशिते,
लक्ष्मी-लज्जा-महाविद्या-श्रद्धा-पुष्टि-स्वधा माँ,
महारात्रि-मेघा-सरस्वती-वरा-भूति-वाभ्रवी, ध्रुव,
काली, संयमपरायणा-ईशा अम्बिके पूजिते माँ |

मात रक्षा कर पाप कर्मो से, पुत्र बना प्यार दे,
हे सर्वेश्वरी सर्व-शक्ति-संपूर्ण देवि दुर्गे नमस्ते,
कात्यायनी-त्रिलोचना- देवि सौम्य मुख धारी
भद्रकाली ज्वालामुखी नमन असुर मारे हस्ते |

हे देवि सर्व-रोग नष्ट करती, कुपित हो आप
तो करती समाप्त सभी मनोवांछित कामनाएं,
जो भी है शरण तेरी पाते नही कभी कष्ट वो,
शरण देते औरों को जो है शरण आपकी आयें |

जितने भी शास्त्र हैं वेद है सभी में तेरा वर्णन,
केवल तू ही माँ अंधकार मोह के गड्ढे से परे,
विश्वेश्वरी तो पालन कर्ता, तू ही विश्व धरता,
वन्दनीय विश्वनाथ की, सर्व विश्व रचियता |

प्रसन्न हो शीघ्र प्रकट हो माँ, रक्षा करो माँ ,
रक्षा की असुरों से वैसे शत्रुओं से रक्षा करो,
माँ जग का ताप हरो, पाप हरो, उत्पात हरो,
विश्व पीड़ा दूर करो, चरण पड़े, वर दे ढेरों |

प्रसन्न हो कहां दूंगी वर जन-कल्याण को,
देव मांग रहे वर, त्रिलोक की बाधाओं को
शांत करो देवि शत्रु विनाश करो यह वर दो,
रक्त दन्तिका रूप धर शताक्षी कहलाने को |

आउंगी कलि काल, होंगे जब अनाचार अति,
शत नेत्रों से प्रकट हो भरण करुँगी धरा का,
सौ बरसो की जल-विहीन पृथ्वी सिंचन को
प्रकृति-पोषित करूँ रूप हो शाकम्भरा का |

दुर्गम दैत्य संहार करूँ दुगदेवि कहलाऊं मै,
अरुण दैत्य मार भीमा देवि रूप हो विख्यात,
असंख्य भ्रमरों की ले सेना महा असुर मारूं,
भ्रामरी नाम से गुणगान हो जग में प्रख्यात |

लुंगी अवतार जब-जब कष्ट मय जगत होगा,
दानवी बाधा को हराने रूप मेरा उदित होगा |

भाग-१४
(महात्म्य)

हे त्रिनेत्री देवि नमन,
हे विद्‌युत-सम-प्रभा देवि प्रणाम,
हे सिंह-वासिनी देवि अभिनन्दन,
हे दामिनी से चमकदार अस्त्र-शस्त्र
धारिणी देवि नमस्कार !

देवि ने दे वर, यूँ कहा, निश्चित होगी दूर बाधाएं,
होगा निश्चित कल्याण, होंगे नष्ट शत्रु भी सारे,
आनंदित कुल होंगे, सर्वत्र होंगे शान्ति-कर्म भी,
ग्रह बाधाएं अदि सभी मात्र पठन से तिरिस्कारें |

महांत्म्य बतलाया माँ देवि ने लुप्त होने से पहले
पूजन विधि भी बतलाई, सुरथ को वर से पहले,
कष्ट हरती माँ जब भी सब अम्बे को याद करें,
अंतर्ध्यान हुई अम्बिका ह्रदय सूक्ष्म ज्ञान भरे |

सम्पूर्ण कथा में देवि ने मारे राक्षस विकट कई,
मधु-कैटभ मारा बन योगमाया योगनिंद्रा का

उत्पन्न निज मन की कुरीतियाँ राक्षस द्‌वय है,
भाव अनुपम बतला गयी माँ इस वध-रहस्य का|

माँ का प्रादुर्भाव भी एक अद्‌भुत ज्ञान हमें दे रहा,
आये मुश्किलें तो निज बल संग्रह करना होगा,
सभी तेजोमयी ताकतों को अर्जित करना होगा,
परास्त शत्रु करने दुर्गा का सृजन करना होगा |

तेज-शीलता-बुद्धि-साहस-विद्वता सभी थी देवों में
बिखरा पराक्रम तो विजयी न हो सका असुरों से
धर रूप देवि का जब संगृहीत हुई समस्त ताकतें,
धराशायी हुए असुर विकट रहे वो भी धुल चाट ते |

महिषासुर संहार किया देवि ने ले रूप दुर्गा का,
अनाचार-अत्याचार का प्रतिक दैत्य था दुर्दांत
अहंकार ही निज मन का है महा दुराचारी दैत्य,
केंद्रित कर समस्त क्रियाएँ कर अंतस को शांत |

माँ ने जब मार गिराये शुम्भ-निशुम्भ दुष्ट
शेष बचे असुर भी तत्काल चले अतल को
देवि अम्बा नित्य है, वर्तमान है, है भविष्य
सदा रक्षा करती कष्ट होता जब भूतल को |

वह विश्व मोहिनी जगदम्बा ज्ञान का भण्डार
वह महा-काली, प्रलय कारी, करे जग उद्धार,
सनातनी देवि रक्षा करे भुत-वर्तमान-भविष्य
अम्बिका उन्नत करे बन लक्ष्मी ये जग संसार |

भाग-१५
(देवि-वरदान)

उत्कृष्ट सबसे तू, तू ही विजय शालिनी,
देवि जन्म-मरण के बंधन से तूतारिणी
तू मंगला, तू काली प्रलय काल कारिणी,
सूख-मंगल दे भक्तों को तू स्वीकारिणी |

अष्ट-योग, कर्म रूप उपासना, दुहसाध्य,
साधन प्राप्त कर बनी जगदम्बा दुर्गा माँ,
कल्याण करे कहलाये शिवा, तू ही धात्री,
तू जननी सम्पूर्ण जगत की करती क्षमा |

सर्व-यग्य-गुण प्राप्त कर तू होती स्वाहा,
तू ही पितृ भरण करे, तेरी चामुंडा जय हो,
सब प्राणियों के कष्ट हरने वाली जय हो,
सर्व-व्याप्त देवी तू काल-रात्री तेरी जय हो |

हे देवी तू समर्थ है वर देने में तुझे नमस्कार,
वर दे ब्रह्मा को और किया असुरों का वध,
मुझे भी देवी रूप-आत्म स्वरुप ज्ञान को दो,
दो मोह पर विजय, यश दो, हरो काम क्रोध |

महिषासुर मर्दिनी, भक्त-वत्सला, नमन तुझे,
रक्तबीज,चंड-मुंड नाश करने वाली नमन है,
दुःख हरे आपने शुम्भ-निशुम्भ विनाश कर,
मुझे रूप दे, जय दे, यश दे, और द्वेष को हर, |

हे शत्रु-विनाशनी देवी, हे दुर्गर्तिविनाशनी देवी
नमन है देवी , आप करती दुर्गुणों का विनाश,
हे पाप हर्ता अम्बिके, स्तुति करते विशेषकर,
मुझे रूप दे, जय दे, यश दे, और द्वेष को हर, |

हे देवी सोभाग्य दे, आरोग्य दे, दे परमसुख,
अम्बिके चरण पड़ा यह भक्त कृपा कर बस,
हे बलप्रदायानी, हे शत्रु संहारिणी, नाश कर,
मुझे रूप दे, जय दे, यश दे, और द्वेष को हर, |

प्रचंड-दैत्य दर्प दलन कर्ता, शरणागत हूँ तेरी,
तू ही विद्या देती, तू ही यश देती, तू ही लक्ष्मी,
चतुर्मुखी ब्रह्मा की प्रशंसित तू तो चारों प्रहर,
मुझे रूप दे, जय दे, यश दे, और द्वेष को हर, |

इस विधि प्राथना कर समापन कर कथा को,

ऋषिवर बोले सुरथ से महातम्य देवी कथा का,
जगधारी देवी का प्रभाव कुछ विकट ऐसा ही,
विद्या का सृजन श्रोत देवी का वर्णन ऐसा ही |

सर्वत्र मोह फैलाती माया विष्णुमाया देवी की,
राजन, वैश्य और अनन्य होते है प्रभावित ऐसे,
होते रहे है होते रहेंगे भविष्य में उस माया से,
मोह को विजित करने , शरण जाओ देवी के |

मेघामुनी के वचन सुन तप को गए राजन तत्काल,
देविसुक्त जप करके आराधन करते वे सालों-साल,
निराहार वृत रखा, एकाग्रचित्त होकर किया चिंतन,
प्रसन्न हो जगदम्बे ने, प्रत्यक्ष हो,उस को दिया दर्शन |

अभिलाषित वस्तु का वर प्रदान को हुई थी देवि प्रकट,
संतुष्ट थी माँ, उद्दत वरदान को, राजन से आग्रह कर
कहा,विजित शत्रुओं से होगा, प्राप्त होगा राज्य शान से,
म्रत्यु पश्चात सूर्य-वंश में जन्म ले सावर्णि मनु नाम से,|

भक्ति-पूर्वक स्तुति करे जो कोई देवि माँ कल्याणी का,
करती मात रक्षा उसकी, करती उसका सकल कल्याण
अंतर्ध्यान हुई माँ देवि चंडिका-अम्बिका दे यह वरदान |

भाग-१६
(उपसंहार)

कर रहा निवेदन ,
मात तेरा अभिनन्दन,
कर कृपा मुझ पर हो सफल चित्रण |

गदा-खेट-मातलूँग-पान पात्र धारिणी देवि,
कनक-कान्ति, कनाकाभुषण, कनक छवि,
परमेश्वरी महालक्ष्मी त्रयोगुन आपमें साजे
तामसी काली रूप, सात्विक शारदा विराजे|

आप ही वरन करें जग पिता हो ब्रह्मलीन,

आप ही जग माता, आप शिव वामान्गिन
पराशक्ति महालक्ष्मी का विचित्र है रहष्य
आप ही गौरी प्रलयंकर महेश्वर अर्धांगिन |

भूल अनेको की हम ने जग में आकर माँ,
क्षमा करें आप, समझ नादान हैं देवि माँ,
न तो जानता पूजा विधि मै, न ही मन्त्र,
जानता हूँ मै, माँ मात्र,तेरी भक्ति याचना |

माँ मै मुर्ख स्तुति-अभ्यास नही मुझे कोई,
न आवाहन, न ध्यान का ज्ञान मुझे कोई,
मै तो समक्ष आपके कर सकता बस विलाप,
अनुसरण करना जानता, माँ शरण लें आप |

पूजा हीन, धनहीन, आलसमय जीवन मेरा,
क्षमा करें माँ,त्रुटीकोई हुई हो करने में सेवा
पुत्र तो होते ही ऐसे माँ होती सदा क्षमा वान,
भूल, भूलें पुत्रों की, माँ होती सदा क्षमा वान |

धरा बीच अनेकोनेक हुए लाल माँ तुम्हारे तो,
मै लाल अनोखा खास, चंचल है प्रवृति बहुत,
त्याग आपको भुला, उचित नही ये अभिमान
भूल, भूलें पुत्रों की, माँ होती सदा क्षमा वान |

तुम बरसाती अत्यधिक स्नेह इस सेवक पर,
यद्दपि की न सेवा आपके चरण की मैंने कभी
भेंट किया न कोई धन , बढाने आपका मान,

भूल, भूलें पुत्रों की, माँ होती सदा क्षमा वान |

हे अर्पणा मात, अक्षर एक मन्त्र का कानो में
तेरा दिया, जो बना देता मुर्ख को भी वक्ता,
कर दे दूर सारी व्यथा, गाने लगूं मधुर गान,
भूल, भूलें पुत्रों की, माँ होती सदा क्षमा वान |

चिता-भष्म लपेटे रहने वाले दिगंबर धारी वे,
शिव भी शिव बने, किया परिणय जब तुमसे
जगदीश्वर कहलाये जग में बढ़ा उनका मान,
भूल, भूलें पुत्रों की, माँ होती सदा क्षमा वान |

न माँ मुझे कोई चाह मोक्ष की, न चाह वैभव की
हे शशिधर शोभित माँ, न आकांक्षा का ध्यान
बस माँ पूरा करना मेरा इतना अनुरोध आप,
रुद्रानी, भवानी, जप-जप कर निकले मेरे प्रान |

कभी चाह कर भी न कर सका विधिवत पूजन
वाणी मेरी करती रही सदा पापाचार का स्रवन,
बस तुम ही ने माँ मुझे संवारा, तू ही भगवान्,
भूल, भूलें पुत्रों की, माँ होती सदा क्षमा वान |

हे करूणा सिन्धु महेश्वरी,

हे जगदम्बा भवानी,
दुर्गा-दुर्गति शमनी,
दुर्गार्तिविनाशनी,
शरण तेरे पड़ा बालक
क्षमा कर, कृत सारे ,
मै बालक अधीर
बल स्वभाव होता अपराधी,
अपराध ही मेरा ज्ञान,
माँ होती सदा क्षमा वान |

पुत्र तो होते ही ऐसे माँ होती सदा क्षमा वान,
भूल, भूलें पुत्रों की, माँ होती सदा क्षमा वान |